दिल्ली में अरुणाचल की लोकधुनें

DB Reporter @ Delhi

लैंड ऑफ दि राइजिंग सन, अरुणाचल प्रदेश की वादियों में गाए जाने वाला लोक गीत-संगीत ही है जो आज भी वहां के लोगों को एक सूत्र में बांधे रखता है। लोकगीतों का यह जादू देखने को मिला रविवार को आईजीएनसीए कैंपस में आयोजित अरुणाचल प्रदेश के लोकगीत के कार्यक्रम में। अरुणाचल की मिट्टी की खुशबू का अहसास कराने वाले लोक कलाकारों के मुताबिक गांव के खेतों में, तीज त्योहारों में, नई शुरुआत में और हर उस पल को खास बनाने के लिए इस तरह के गीत गाए जाते हैं। लोक कलाकार देलोंग पादुंग ने बताया कि अरुणाचल प्रदेश में युवा मॉर्डन म्यूजिक सुनना पसंद करने लगे हैं। इससे जनजातियों के बीच मशहूर ये लोकगीत खत्म होने लगे हैं।

अरुणाचल प्रदेश के आर्टिस्ट

I feeling very much proud of myself for the fact that i have been made to showcase my old Traditional folk culture in this platform of non other than IGNCA(Indira Gandhi National centre for Arts) Govt.of India, the highest body looking after the cultural aspect of the Nation n very much grateful to the authority of the IGNCA also to have picked me up from such far flung area of North Eastern pit of our country n i firmly believed that this kind of gesture with always be there in future too.Thnk u so much.

IGNCA restores the identity of folk music

OUR CORRESPONDENT

REVIVING the melodious folk songs of Arunachal Pradesh, Indira Gandhi National Art Center (IGNCA) organized the third series of 'Sanjari' program in New Delhi this Saturday. This program is organized every month and attempts to preserve the essence of the folk music of different states in its original form. On its 30th foundation day, original folk music was presented for the common people in Delhi.

This edition of 'Sanjari' focused on Arunachal Pradesh' cultural heritage. It is the country's only state, where 26 major tribes and more than 100 sub-tribes reside. It is richest in terms of language, art, and culture. Arunachal has 90 languages and more than 100 folk tradition. The glimpse of Arunachal in its folk music was mesmerizing.

Delong Padung, the first folk artist from Arunachal who is honoured with Bismillah Khan Award performed with his team. Their efforts engaged the young generation and created awareness of folk music losing its identity.

"Today, we will sing the songs of 'Adi tribe'. In the folk music tradition of Arunachal, these songs are sung all day and night and therefore, we do not have a short version of folk. But we are making it for the new generation," said Delong Padung.

"We had prepared a smaller version today as the younger generation is taking interest in it. Arunachal's cultural heritage is vast and has more than 100 folk music traditions alive but now, western culture influencing our local rich culture. We are afraid that if we do not preserve it today, we will lose the identity of Arunachal. I am very grateful to IGNCA, who gave us this platform in the country's capital and supported our movements of folk music," he added.

Delong Padung and his team from "The land of rising sun' proved through their folk songs and folk dance that no matter what the language is, the music is appreciated and unite people.

लोक संगीत को पाश्चत्य संस्कृति से खतरा

■ नई दिल्ली (एसएनबी)।

बिस्मिल्ला खान पुरस्कार से सम्मानित अरुणाचल प्रदेश के लोक कलाकार देलोंग पादुंग का कहना है कि पाश्चत्य संस्कृति के प्रभाव से लोक संगीत परंपरा को खतरा है। लोक संगीत परंपरा को संरक्षित कर नई पीढ़ी तक ले जाने की जरूरत है।

संस्कृति मंत्रालय द्वारा लोक संगीत परंपरा को बढ़ावा देने की पहल के तहत बिस्मिल्ला खान पुरस्कार से सम्मानित अरुणाचल प्रदेश के लोक कलाकार देलोंग पादुंग ने रविवार को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में अरुणाचल के लोक संगीत की छटा बिखेरी।

इस दौरान अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि जो गीत आज वह इस तरह के मंचों पर सुना रहे हैं वह अरुणाचल की लोक संगीत परंपरा में लोक उत्सवों के दौरान रात भर गाये जाते हैं। उन्होंने कहा कि हमारे यहां लोक संगीत का सूक्ष्म रूप नहीं मिलता है,

> अरुणाचाल के लोक कलाकार देलोंग पादुंग ने लोकसंगीत परंपरा को संरक्षित करने पर दिया बल

लेकिन हमे इसे अरुणाचल की सीमाओं से बाहर निकालकर नई पीढ़ी में लोकप्रिय करना था, इसलिए हमने इसका छोटा संस्करण तैयार करना पड़ा और अब युवा पीढ़ी इसमें रुचि लेने लगी है। अरुणाचल की सांस्कृतिक विरासत विराट है, अरुणाचल में आज भी सौ से अधिक लोक संगीत परंपरा जीवित है लेकिन पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से आज उन्हें खतरा है। हमें डर है की अगर आज हम इसे संरक्षित नहीं करेंगे, नई पीढ़ी तक नहीं ले जाएंगे तो शायद ये लुप्त हो जाएंगी, जो कि कुछ लोक संगीत के साथ हो चुका है। उन्होंने आईजीएनसी द्वारा लोक संगीत को प्रोत्साहित किए जाने संबधी प्रयासों की सराहना की।

लोक संगीत परपंरा को बरकरार रखने तथा प्रोत्साहित करने के लिये संस्कृति मत्रालय की पहल पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय लोक कला केन्द्र द्वारा संजारी कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इसी कार्यक्रम के तहत आज आईजीएनसीए परिसर में लैंड आफ द राइजिंग सन अरुणाचल प्रदेश के लोक संगीत के कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अरुणाचल के लोकगीतों को संजोता 'संजारी'

नई दिल्ली, 21 जनवरी (ब्यूरो): 100 से अधिक लोक संस्कृति व लोक संगीत की परंपरा से सम्पूर्ण राज्य अरुणाचल प्रदेश (दी लैंड ऑफ राइजिंग सन) के लोक गीत और

■ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में कार्यक्रम का आयोजन

नृत्य इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में आयोजित रविवार को संजारी श्रंखला की तीसरी प्रस्तुति में देखने को मिला। बिस्मिल्ला खान पुरस्कार से सम्मानित अरुणाचल के लोक कलाकार देलोंग पादुंग ने अपनी टीम के साथ अरुणाचल के पारंपरिक लोक गीत और नृत्य की प्रस्तुति दी। आईजीएनसीए अपने 30 वें स्थापना दिवस से लगातार संजारी कार्यक्रम का आयोजन हर माह कर रहा है, जिसका उद्देश्य देश के विभिन्न भागों से लुप्त हो रहे लोक नृत्य और संगीत को उसके असल रूप में उपलब्ध करवाना है। कार्यक्रम में पासीघाट के देलोंग पादुंग और उनकी टीम ने लोक गीत एवं लोक नृत्य पर अपनी प्रस्तुति से साबित कर दिया की भाषा चाहे जो भी हो कला को समझने और दूसरों तक पहुंचाने के लिए कलाकार के भाव और संगीत सबसे अहम है, जिसके लिए भाषा को समझने की जरूरत नहीं होती। देलोंग पादुंग ने कहा कि भले ही आज हम आपको आदि जनजाति 'जिसमें' के गीत कुछ चंद घंटों में सुना रहा हूं, लेकिन अरुणाचल की लोक संगीत परंपरा में लोक उत्सवों के दौरान ये गीत रात भर गाये जाते हैं। हमारे यहां लोक संगीत का सूक्ष्म रूप नहीं मिलता है। लेकिन हमें इसे अरुणाचल की सीमाओं से बाहर निकालकर नई पीढ़ी में लोकप्रिय करना था। इसलिए हमने इसका छोटा संस्करण तैयार किया और अब युवा पीढ़ी इसमें रुचि लेने लगी है। अरुणाचल की सांस्कृतिक विरासत विराट है। अरुणाचल में आज भी सौ से अधिक लोक संगीत परंपरा जीवित है लेकिन पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से आज उन्हें खतरा है। हमें डर है की अगर आज हम इसे संरक्षित नही करेंगे। नयी पीढ़ी तक नही ले जायेंगे तो शायद ये लुप्त हो जायेंगी। मैं" आईजीएनसीए का बहुत आभारी हूं जिसने हमें देश की राजधानी में यह मंच दिया और अपने लोक संगीत को आगे ले जाने में हमारा सहयोग दिया है। संजारी श्रंखला की पहली प्रस्तुति में मैथिली और ब्रज के गीत, दूसरी प्रस्तुति में राजस्थान के मांगणियार का गायन को सुनने का अवसर मिला था।

'संजारी' प्रस्तुति देते कलाकार। फोटो : रमाकांत कुशवाहा